International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 4, Issue 6, June 2017
Website- www.aarf.asia, **Email** : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

प्रयोजनमूलक हिन्दी का हिन्दी प्रचार–प्रसार मे योगदान

प्रा. डॉ.कल्पना सतीश कावळे
हिन्दी विभाग प्रमुख,
एफ.ई.एस. गॅर्ल्स कॉलेज,
चंद्रपूर

वैश्विकरण के दौर में प्राचीन काव्यकृतियों की मान्यताओं से युग सापेक्ष मतों का सामंजस्य ातश: समीचीन नहीं है, अत: परिवर्तित मन:स्थिति में विश्व के विकसित भा ाओं में हिन्दी के स्वरूपों में भिन्नता का होना पूर्णतया स्वाभाविक है। इस दृ ट से हिन्दी के प्रचार प्रसार में प्रयोजन मूलक हिन्दी के अवदानों की समीक्षा सर्वथा प्रासंगिक है।

भारतीय आचायो की स्प ट धारणा है कि किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति निश्प्रयोजन नहीं होती, उसमें किसी न किसी प्रकार के प्रयोजन का भाव सदैव विद्यमान होते हैं –

'सावत् प्रयोजनं नोक्तं तावत् तत्केन ग्रह्यतें'।

सामान्यत: हिन्दी के व्यावहारिक पक्ष को अधिक बोधगम्य एवं स्प ट करने के लिए प्रयोजनमूलक विशे ाण का प्रयोग किया गया है। प्रयोजनमूलक हिन्दी अंग्रेजी के फंक्शनल हिन्दी का ाब्दानुवाद है अर्थात् वह हिन्दी जो हमारे दैनंदिन कामकाज, बोलचाल अथवा लिखित रूप में व्यवहार में प्रयुक्त होती है, प्रयोजनमूलक हिन्दी कहलाती है प्रयोजनमूलक हिन्दी की व्याख्या क्रम में विद्वानों की अलग अलग संधारणाएँ हैं।

डॉ. रमाप्रसन्न नायक के प्रयोजन मूलक हिन्दी के लिए व्यावहारिक हिन्दी की संज्ञा प्रदान की है। डॉ. मोटूरि सत्यनारायण की टिप्पणी हिन्दी की प्रयोजनमूलकता के संदर्भ में दृ टव्य है – "जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उपयोग में लाई जानेवाली हिन्दी ही प्रयोजनमूलक हिन्दीं है।"

यद्यपि सामान्य भा ा और प्रयोजनमूलक भा ा में समानता दिखाई पड़ती है परन्तु तात्विक दृ ट से दोनों में भिन्नता है। इस संदर्भ में ध्यातव्य है –

(१) सामान्य भा ा और प्रयोजन मूलक भा ा एक ही है परन्तु उनकी ाब्दावली सर्वथा एक दूसरे से भिन्न है।

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

(२) सामान्य भा ाा की अभिव्यक्ति ौली लाक्षणिक, व्यंजनापूर्ण आलंकारिक एवं हास्य विनोद युक्त होती है जबकि प्रयोजनमूलक भा ाा की अभिव्यक्ति ौली ाुध्द वाच्यार्थ प्रधान तथा अलंकार आदि से सर्वथा मुक्त सरल, सहज एवं एकार्थक होती है।

(३) सामान्य भाषा, भा ाा के मानक रूप के प्रति अधिक सचे ट और सावधान नहीं होती परन्तु प्रयोजनमूलक भा ाा कार्यालयी वैधानिकता की औपचारिकता से पूर्ण भि ाक मानवता से संचालित होती है। प्रयोजनमूलक हिन्दी के निम्न रूप सर्वथा ध्यातव्य हैं –

(१) बोलचाल की हिन्दी (२) व्यापारिक एवं वाणिज्यिक हिन्दी

(३) कार्यालयी हिन्दी (४) ाास्त्रीय हिन्दी

(५) वैज्ञानिक एवं तकनीकी हिन्दी (६) सामाजिक हिन्दी

(७) साहित्यिक हिन्दी (८) प्रशासनिक हिन्दी

(९) जनसंचारिय हिन्दी

उक्त विश्ले ाण के अनत्तर हम नि क ति: कह सकते हैं कि विभिन्न व्यवसायों एवं संगठनों से जुड़े कार्यकर्मियों जैसे – डॉक्टर, वकील, वैज्ञानिक, इंजिनियर, पत्रकार एवं व्यापार के क्षेत्र में प्रयुक्त भा ाा ही भारत की प्रयोजनमूलक भा ाा है। प्रयोजनमूलक भा ाा ने २१ वीं सदी में अपनी जडे बड़ी सुदृढ़ बना ली है। इस क्रम में ध्यातव्य है कि प्रयोजनमूलक हिन्दी के महत्व को कम आँकना हमारी अज्ञानता कहलायेगी। इस दृ ट से में प्रयोजनमूलक हिन्दी का हिन्दी के प्रचार प्रसार में योगदान की मीमांसा ध्यातव्य है। इसे अधोलिखित आयामों में प्रस्तुत करना सर्वथा उचित है–

(१) वाणिज्य व्यापार क्षेत्र में हिन्दी :–यह जीवन का व्यापक और महत्वपूर्ण क्षेत्र है वर्तमान वैश्विकरण युग में विश्व व्याप्त बेरोजगारी से निदान हेतु वाणिज्य व्यापार की महत्वपूर्ण भूमिका है, अत: देश के विभिन्न व्यापारों से जुड़े लोगों की भा ाा के रूप में प्रयोजन मुलक ाब्दों ने अपनी विशि ट पहचान बनायी–

वाणिज्य के जुड़े सभी को सम्पर्क एवं कार्य सम्पादन हेतु एक ही भा ाा को स्वीकार करना पड़ा परिणामत: इस क्षेत्र की भा ाा ही प्रयोजनमूलक हिन्दी हो गई।

दैनिक जीवन में इस तरह के प्रयुक्त प्रयोजन मूलक ाब्द हमें सहज ही प्रयोजन मूलक व्यावहारिक हिन्दी की शिक्षा देते हैं। इस संदर्भ में निम्न उदाहरण हैं।

"ग्राहकों कमजोर, खाद्यतेल ढीले"

"पेंट व्यवसाय हुआ बेरंग"

"रंगदारी की धमक, फीकी पड़ी बाजार की चमक"

"सोना उछला, चाँदी लुढ़की"

"दालें गरम,? चावल नरम, कपास तेज"

उक्त उदाहरणें में ढ़ीलें, बेरंग, धमक, चमक, नरम, गरम एवं तेज आदि ाब्दों तथा क्रियाओं का अपना विशि ट सांकेतिक संदर्भ है जो सहज ही बोधगम्य भी है।

(२) कार्यालयी हिन्दी :– किसी भी सरकारी, अर्ध्दसरकारी एवं संस्थानों के दैनिक कार्योंके सम्पादन में प्रयुक्त हिन्दी को कार्यालयी हिन्दी कहा जाता है। कहीं कही इसे प्रशासनिक या विभागीय हिन्दी भी कहा जाता हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात अधिक से अधिक समझो लिखी पढ़ी जाने वाली सरल सहज सुपाठ्य एवं बोधगम्य सम्पादकीय भा ाा हिन्दी को १४ सितम्बर १९४९ ई. को राजभा ाा का दर्जा दिया गया।

कार्यालयी हिन्दी ने जन–जनतक पहुँचाकर अपनी जड़े सुदृढ़ कर ली, परिणामस्वरूप पदाधिकारी से लेकर चतुर्थश्रेणी कर्मचारियों एवं ाासनकी भा ाा प्रयोजनमूलक हिन्दी हो गयी। आज कार्यालयों का हर कार्य सम्पादन में प्रयोजनमूलक हिन्दी का उपयोग हो रहा है। जो स्वर्णिम भवि य का द्योतक है। अत: कह सकते है कि रा ट्रभा ाा हिन्दी के प्रचार–प्रसार में कार्यालयीन प्रयोजनमूलक हिन्दी का अप्रतिम योगदान सर्वथा अद्वितीय व अविस्मरणीय है।

(३) संचार माध्यमीय हिन्दी :– २१ वी सदी में वैज्ञानिक उपलब्धियों को जन जनत क पहुँचाने में संचार माध्यमों कोयोगदान महत्वपूर्ण है। उसने प्रयोजनमूलक हिन्दी के कवच को धरण कर ाी स्य लोकप्रियता प्राप्त की। आज संचार के दोनों माध्यमों – (१) पत्र–पत्रिकाओं और (२) इलेक्ट्रानिक मीडिया में सर्वत्र प्रयोजन मूलक हिन्दी का प्रयोग हो रहा है। सामान्यत: दोनों माध्यमों का प्रयोजन ही सम्यक भावों की अभिव्यक्ती तथा संप्रे ाणीयता।

संचार माध्यमों में प्रयुक्त हिन्दी जीवन के हर पक्षों एवं क्षेत्रों के आगत ाब्दों को ग्रहण कर जब समुदाय की बोल–चाल की भा ाा में प्रयुक्त करने का प्रयास करती है। इस क्रम में प्रयुक्त संक्षिप्तता ने हिन्दी के प्रगती मार्ग का द्वार प्रशस्त कर दिया। भाजपा, बसपा, राजद, जदयू, लोजपा, राकांपा जैसे लोक प्रचलित ाब्द पाठकों को आकर्ि ति कर लेते ही दूरदर्शन रेडियो, धर्मिक कार्यक्रमों में, सिरियल में वर्ग भेद, जाति भेद, संम्प्रदाय भेद एवं क्षेत्र भेद से ऊपर उठकर सम्पूर्ण भारत को एकता एवं अखंडता के सूत्र में बांध दिया। इस रा ट्रीय एकता एवं अखंडता की रक्षा में प्रयोजनमूलक हिन्दी का अवदान सर्वथा लाघ्य है।

(४) विज्ञापन क्षेत्र में हिन्दी का वर्चस्व :–आज का युग विज्ञापन का है। इसी विज्ञापन के बल पर बड़ी–बड़ी रा ट्रीय कम्पनियाँ, राजनैतिक पार्टियाँ, कम्पनियाँ सिनेमा जगत से जुड़े नेता, अभिनेता विश्व में अपनी विशि ट पहचान बताने में निगम्न है। इस क्रम में समाचारपत्र रेडियो दूरदर्शन इ. में निर्गमित विज्ञापन सहज ही चिंताक र्कि सिध्द हो रहे हैं। विज्ञापन के तीनों रूपों – दृश्य, श्रव्य एवं मुद्रित में हिन्दी का प्रयोग निर्बाधगति से हो रहा है। आज के प्रमुख विज्ञापन हैं। सम्प्रे ण की दृ ि ट से प्रयोजन मूलक हिन्दी का योगदान मूर्धन्य स्थान पर है।

"यह आराम का मामला है।"

"धूम मचादे रंग जमादे"

"थंडा मतलब कोका कोला"

"भारत माँ के तीन धरोहर अटल, अडवानी, मुरलीमनोहर"

(५) वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्र :– २१ वीं सदी का चमत्कार वैज्ञानिक उपलब्धि की देन है। अंग्रेजी के व्यापक प्रयोग के बाद भी हिन्दी माध्यम से अध्ययन, अध्यापन अनुसंधान करने वालो की संख्या बढ़ती ही जा रही है। दिनोंदिन हिन्दी का प्रयोग विज्ञान और औ्ोगिकी क्षेत्र में वैज्ञानिक लेखन का प्रचारप्रसार बढ़ा और हिन्दी में वैज्ञानिक ाब्दावलियों में अप्रत्याशित वृध्दि हुई। इस दृ ट से निम्न ाब्द प्रयोगध्यातव्य हैं। – ओजोन, हाइड्रोजन, कॅलोरी, इंजीनियरिंग।

(६) सूचना क्रांन्ति एवं प्रौद्योगिकी :– हिन्दी के प्रचार प्रसार में सूचना प्रोद्योगिकी का योगदान अविस्मरणीय है। सुचना की नई तकनीकों की वजह से आज विश्व के आँखें चौधिंया गई है कम्प्यूटर में नागरी लिपि तथा आत्मा भारतीय लिपियों के प्रयोग की दिश में जिस्ट प्रौद्योगिकीने क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया है। इस दृ ट से प्रयोजन मूलक हिन्दी को व्यापक स्वरूप प्रदान करने की दिशा में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर के कम्प्यूटर के विध्वानों द्वारा प्रदत्त सेवा जिस्ट का योगदान अप्रतिम है।

सारांशत: कह सकते हैं कि प्रयोजनमूलक हिन्दी सामाजिक सद्व्यवहार की भा ाा है। भी ाण बेरोजगारी के युग में इसे अपनाकर बहुत हद तक आजीविका की समस्या का निदान संभव है।

नि क र्ा :

आधुनिक वैज्ञानिक युग के कार्य क्षेत्रों में विज्ञान, वाणिज्य, व्यवसाय, उद्योग, यांत्रिकी एवं दूरदर्शन के आकांक्षाओं जो ाब्दावली पूर्ण करती हैं और उनशब्दावलियें से जो हिन्दी गढित होती है उसे यदि प्रयोजनमूलक हिन्दी कही जाय तो इसमें संदेश का कोई अवकाश नहीं है आधुनिक जीवन के समस्त प्रयोजनों को जो सटीकता के साथ सिध्द करती है उसे प्रयोजनमूलक हिंदी की संज्ञा दी जा सकती है।

संदर्भग्रंथ :–

१) हिन्दी भा ाा – प्रयोजनमूलक– डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया

२) प्रयोजनमूलक हिन्दी–डॉ. दिनेश प्रसादसिंह

३) प्रयोजनमूलक हिन्दी – डॉ. दिनेश प्रसादसिंह

४) प्रयोजनमूलक हिन्दी – डॉ. दंगल झाल्टे

५) प्रयोजनमूलक हिन्दी –डॉ. सोनटक्के

६) हिन्दी अनुशीलन सि –दि–२००२

७) भारतीय हिन्दी परि ाद अंक

८) प्रयोजनमूलक हिंदी – डॉ. माध्यम सोनटक्के